साभार: यूएसआई

मुंबई में 15 मार्च 2007 को अमेरिकी कांसुलेट जनरल, मुंबई और इंडो-अमेरिकी चैंबर ऑफ़ कॉमर्स ने मिलकर कांसुलेट परिसर के लॉन में ''एड्स मुक्त भारत'' कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य भारत में एचआईवी-एड्स के प्रति जागरूकता बढ़ाना और एड्स के खिलाफ संघर्ष में निजी क्षेत्र की प्रतिबद्धता को प्रोत्साहित करना था। कार्यक्रम में कार्पोरेट जगत की हस्तियां, बॉलीवुड के कलाकार, सरकारी अधिकारी, गैरसरकारी संगठनों के लोग और पत्रकार उपस्थित थे। इस मौके पर खास सम्मानित मेहमान थीं हॉलीवुड की फिल्म स्टार और एड्स से लड़ाई में युवाओं के लिए प्रचार दूत की भूमिका निभाने वालीं एशले जड। वह एचआईवी के बारे में जागरूकता के लिए विशेष रूप से मुंबई आई थीं। पॉपुलेशन सर्विसेज की ब्रांड प्रचार दूत सुश्री जड नई दिल्ली के *अपने आप* अनाथालय में बच्चों से भी रूबरू हुईं।

विकास सरना

अमेरिकी वायुसेना की प्रशांत-एशिया क्षेत्र की पैसेफ़िक ट्रेंड्स बैंड के सदस्य अमेरिकी वायुसेना की स्टाफ़ सार्जेंट फेलिता रोव, कीबोर्ड टेक्निकल सार्जेंट हैरी एन. हर्नडॉन और अन्य के साथ झूमने के लिए युवा दर्शक रेशम नरूला मंच पर जा पहुंची। मौका था मार्च में नई दिल्ली के अमेरिकन सेंटर में *रॉक एन रॉल सोनिये* के फ़्यूजन संस्करण की प्रस्तुति का। भारतीय वायुसेना की 75वीं वर्षगांठ के मौके पर आयोजित समारोह और सैन्य टैटू प्रोग्राम में भागीदारी के लिए यह बैंड नई दिल्ली में थी। अमेरिकी वायुसेना को अभी सिर्फ़ 60 साल हुए हैं। इस बैंड ने कोलकाता और चेन्नई में भी कार्यक्रम पेश किए। अपनी प्रस्तुतियों में उन्होंने भारत के संगीतकार ए. आर. रहमान के *प्रे फॉर मी, ब्रदर* को भी शामिल किया।

समाचार

गुलदस्ता

फोटो: आर. रंग

दिसंबर 2004 में सुनामी के कारण बर्बाद हो गए सार्वजनिक मैदानों को नए सिरे से संवारने के मकसद से इंटरनेशनल सिटी-काउंटी मैनेजमेंट एसोसिएशन ने यूएसएड की वित्तीय मदद से तमिलनाडु के कद्दालोर और नागपट्टिनम में जनवरी में दो सामुदायिक खेल के मैदानों का डिज़ाइन तैयार किया और उन्हें बनाया भी। दोनों शहरों में एक हज़ार से ज़्यादा पुरुषों, महिलाओं और बच्चों ने श्रमदान किया। इन मैदानों का डिज़ाइन अमेरिका के फ़्लोरिडा राज्य के लोगों द्वारा तैयार किया गया। ये लोग भी हाल ही में प्राकृतिक आपदाओं को झेल चुके हैं।

सत्रह साल के भारतीय अमेरिकी संजय मालाकर ने अमेरिकन आयडल रियलिटी टेलिविज़न कार्यक्रम में आखिर नौ में पहुंचकर इतिहास रच दिया है। इस टीवी शो का यह छठा साल है। लंबे बालों और खुली मुस्कान वाले संजय मालाकर फ़ेडेरल, वाशिंगटन राज्य के रहने वाले हैं। दुनिया के करोड़ों दर्शकों द्वारा देखे गए विश्व के इस सबसे देखे जाने वाले टीवी शो में उन्हें कई बार निर्णायकों की कठोर टिप्पणियां भी सुननी पड़ीं और वह कई चरणों के दौरान प्रतियोगिता से बाहर होते-होते बचे।

© फ्रॉक्स

साभार: कैरेन वी. वाटर्स

भारत में फ़ुलब्राइट स्कॉलर के तौर पर कैरेन वी. वाटर्स नई दिल्ली के जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में अंग्रेजी साहित्य और अमेरिकी कविता पढ़ा रही हैं। वह पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त हैं और एयरलिंग्टन, वर्जीनिया की मैरीमाउंट यूनिवर्सिटी में अंग्रेजी की प्रोफ़ेसर हैं। उन्होंने बहुसांस्कृतिक साहित्य और वर्जीनिया वूल्फ़ और एमिली डिकिन्सन जैसे लेखकों पर भी व्याख्यान दिए हैं। उन्होंने पश्चिमी औपनिवेशिक ताकतों की 19वीं सदी की छवियों के बारे में वाराणसी के बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में शोध पत्र भी प्रस्तुत किया और दार्जीलिंग में फ़ुलब्राइट सम्मेलन में भी भाग लिया। उनके विश्वविद्यालय ने जामिया मिल्लिया विश्वविद्यालय को 700 पाठ्यपुस्तकें भेंट की हैं।
www.fulbright-india.org

कनेटिकट के हाटफ़र्ड सिम्फ़नी आर्केस्ट्रा के मुख्य सेलिस्ट जेफ़री क्रीगर ने फ़रवरी में नई दिल्ली में कार्यक्रम पेश किया। इसमें सस्किया राव ने अपनी भारतीय सेलो प्रस्तुति दी। तबले पर थे दुर्जय भौमिक। दर्शकों में सौ से ज़्यादा संगीतकार, संगीतप्रेमी और गैरसरकारी संगठन प्रयास से आए बच्चे शामिल थे। उन्होंने जयपुर में भी कार्यक्रम पेश किया। क्रीगर नई पीढ़ी के सेलो कलाकार हैं जिन्होंने कंप्यूटर, वीडियो और इलेक्ट्रॉनिक सेलो जैसी तकनीक का भी अच्छा समावेश किया है।

फ़ोटो: विकास नंदला

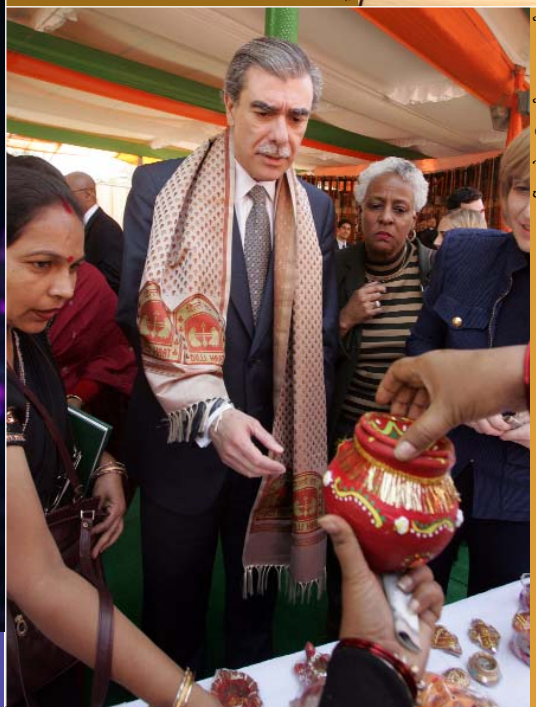

गुरिंदर ओसान © ए.पी.-डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

अमेरिका के वाणिज्य मंत्री कार्लोस गुतिएर्ज ने नई दिल्ली स्थित दिल्ली हाट में खरीदारी की। उन्होंने महिला शिल्पकारों और दुकानदारों से शहरी क्षेत्रों में लघु कर्ज़ के बारे में बातचीत की। उन्होंने फ़रवरी में अपनी भारत यात्रा के दौरान इस आशंका को दूर किया कि अमेरिका की वाल मार्ट जैसी बड़ी कंपनियां भारत के स्वतंत्र छोटे दुकानदारों के लिए बुरी साबित होंगीं। उन्होंने कहा, ''जब अनुभवी कारोबार संचालक की मौजूदगी होती है तो अर्थव्यवस्था में बड़े पैमाने पर कुशलता आती है और माल की आपूर्ति की शृंखला बेहतर होती है। इससे किसानों से लेकर रिटेलर और उपभोक्ता तक सबको लाभ होता है।''